संस्थापित १८६७ ई०

ओ३म्

आर्य मित्र

साप्ताहिक

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुख पत्र

एक प्रति ₹ २.००
वार्षिक शुल्क ₹ १००
(विदेश ५० डालर वार्षिक) आजीवन शुल्क ₹ १०००

● वर्ष : १२३ ● अंक - २८ ● १० जुलाई २०१८ आषाढ़ कृष्ण पक्ष द्वादशी संवत् २०७५ ● दयानन्दाब्द १६४ वेद व मानव सृष्टि सम्वत् : १६६०८५३११६

अवतारवाद किसे कहते है

– डॉ. धीरज सिंह
सभा प्रधान

प्रश्न– अवतारवाद किसे कहते है?

उत्तर– अवतार शब्द का अर्थ है उतरना, अपने पद से नीचे आना, लेकिन इसका अर्थ आजकल उत्पन्न होना या प्रकट होना लगाते हैं।

प्रश्न– तो क्या ईश्वर का अवतार हो सकता है?

उत्तर – नहीं, क्योंकि अगर ईश्वर कहीं ऊँचाई पर बैठा हुआ हो तो उतरे, सो है नहीं। वह तो सर्वत्र व्यापक है। न वह अपने पद से नीचे ही गिर सकता है और न कभी उत्पन्न ही होता है, क्योंकि जो चीज उत्पन्न होगी वह नष्ट भी अवश्य होगी। ईश्वर ऐसा नहीं है और न हम उसके लिये प्रकट होना ही कह सकते है, क्योंकि वह सदा एकरस है। इसलिए अवतारवाद शब्द के जो चार अर्थ ऊपर बतलाये हैं वे ईश्वर में लागू नहीं होते।

प्रश्न– क्या ईश्वर जन्म कभी नहीं लेता?

उत्तर– नहीं, न वह जन्म लेता है, न मरता, न कभी उत्पन्न हुआ है न नष्ट होगा, न उसका आदि है न अन्त है। उसके लिए तो शास्त्रों में कहा गया है–

दिव्यो ह्यमूर्तः पुरूषः स बाह्यभ्यन्तरो ह्यज

ह्यमनाः शुभ्र ह्यक्षरात् परतः पर।।

अर्थात्– वह परमात्मा दिव्य है, मूर्ति और आकार से रहित है, भीतर और बाहर सर्वत्र व्यापक है, अज (कभी जन्म न लेने वाला), प्राण और मन से रहित है, शुभ्र (शुद्ध) है और नाश रहित, पर अक्षर से भी परे है।

प्रश्न– तो क्या ईश्वर शरीर रहित है?

उत्तर– हाँ, ईश्वर के कोई शरीर नहीं है। यजुर्वेद के ४० वें अध्याय के मन्त्र ८ में कहा गया है कि वह परमात्मा "अकायम्" (शरीर रहित), "अव्रणम्" (फोड़ा फुन्सी रहित), "अस्नाविरम्" (नस नाड़ी के बन्धन से रहित), "शुद्धम् (शुद्ध) और पवित्र है। इसी बात को गोस्वामी तुलसीदासजी ने नारायण में बड़े अच्छे ढंग से कहा है–

चौपाई–

बिनु पद चले सुनै बिनु काना।
कर बिनु कर्म करै विधि नाना।।
आनन रहित सकल रस भोगी।
बिनु वाणी वक्ता बड़ योगी।।
तन बिनु परस नयन बिनु देखा।
ग्रहै घ्राण बिनु बास अशेषा।।
इमि सब भांति अलौकिक करनी।
महिमा तासु जाय नहि बरनी।।

प्रश्न – तो क्या राम और कृष्ण ईश्वर के अवतार नहीं थे?

उत्तर– नहीं, राम और कृष्ण महापुरूष थे, विद्वज्ञन थे, योगी थे और आदर्श मनुष्य थे और इन्हीं दिव्य गुणों के कारण लोग उन्हें ईश्वर का अवतार कहने लगे। अगर राम ईश्वर होते तो वह सन्ध्या और उपासना किसकी करते, जैसा लिखा है–

समय जानि गुरू आयु पाई, सन्ध्या करन चले दोऊ भाई।

इसी प्रकार अगर कृष्ण जी ईश्वर होते तो वह गीता के अध्याय १८ में अर्जुन से यह क्यों कहते–

"ईश्वरः सर्वभूतानां हृद्देशेऽर्जुन तिष्ठति।

शेष पृष्ठ ६ पर

सूचना

जिला आर्य प्रतिनिधि सभा मुजफ्फर नगर के प्रधान भाग सिंह जी का निधन दिनांक १०.०६.२०१८ को अपोलो हास्पिटल में हो गया । उनके निधन होने के कारण जिला सभा की बैठक दिनांक २४.०६.२०१८ को आयोजित की गयी।

जिसमें सर्वसम्मति से आगामी चुनाव तक श्री सत्येन्द्र आर्य जी को प्रधान पद का दायित्व सौंपा गया।

– अरविन्द कुमार आर्य
मंत्री – जिला आर्य प्रतिनिधि सभा मुजफ्फर नगर, उ०प्र०

अन्तरंग अधिवेशन सूचना

आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र०, लखनऊ के सभी पदाधिकारियों, प्रतिष्ठित, सहायुक्त एवं अन्तरंग सदस्यों को सूचित किया जाता है कि आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र०, लखनऊ की अन्तरंग सभा का साधारण अधिवेशन दिनांक २२ जुलाई २०१८ दिन– रविवार, आषाढ़ शुक्ल दशमी, पूर्वाह्न ११.०० बजे से स्थान– आर्य समाज गंज स्टेशन रोड मुरादाबाद में प्रधान/का० प्रधान डॉ० धीरज सिंह की अध्यक्षता में सम्पन्न होगी, जिसमें आपकी उपस्थिति प्रार्थनीय है।

एजेण्डा एवं विस्तृत विषयों की रूप–रेखा सभी को डाक द्वारा भेज दी गई है। कृपया समय से उपस्थित होकर अधिवेशन को सफल बनाये।

– स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती
सभा मंत्री

डॉ. धीरज सिंह
प्रधान/संरक्षक

स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती
मंत्री/प्रधान सम्पादक

सम्पादकीय.....

डॉलर के मुकाबले अब तक न्यूनतम स्तर पर रूपया

डॉलर के मुकाबले अब तक के सबसे न्यूनतम स्तर ६६.०६ को छूने के एक दिन बाद शुक्रवार को रूपया १८ पैसे चढ़कर पहले से कुछ बेहतर हुआ है, लेकिन वैश्विक परिस्थितियों को देखते हुए इसकी चुनौती कम होती नहीं दिख रही है। वैसे भी वर्ष जनवरी से अब तक रूपये के मूल्य में सात फीसदी की गिरावट दर्ज हो चुकी है। इससे पहले २४ नवम्बर, २०१६ को रूपया प्रति डॉलर के मुकाबले ६८.८७ के साथ सबसे न्यूनतम स्तर पर था और मोदी सरकार के सत्ता में आने से पहले अगस्त, २०१३ में यह तब ६८.८३ पर पहुँच गया था, जब कच्चे तेल के दाम सर्वोच्च स्तर पर थे। जब से कच्चे तेल के दाम ऊपर की ओर जा रहे हैं, उसका सीधा असर रूपये पर पड़ रहा है और डॉलर के मुकाबले इसके कमजोर होने से चालू खाते का घाटा बढ़ रहा है, जोकि पिछले वर्ष के ०.६ फीसदी से बढ़कर १.६ फीसदी हो चुका है और इसके २०१६ में २.५ फीसदी होने के आसार जताए जा रहे है। इसका सीधा असर महंगाई पर पड़ना लाजमी है।

यह भी नहीं भूलना चाहिए कि रूपये ने न्यूनतम स्तर को तब छुआ, जब भारत आई संयुक्त राष्ट्र में अमेरिका की प्रतिनिधि निक्की हेली ने मोदी सरकार को एक तरह से ईरान से कच्चे तेल का आयात बंद करने की नसीहत दे डाली। अमेरिका राष्ट्रपति ट्रंप ने ईरान के साथ परमाणु समझौता तोड़ने के साथ ही भारत सहित तमाम देशों से कहा है कि वे चार नवम्बर तक उससे तेल खरीदना बंद कर दें, अन्यथा उन पर भी वह ईरान जैसे प्रतिबंध थोप सकते हैं। भारत ८० फीसदी तेल आयात करता है और इसमे ईरान तीसरे नंबर का देश है। भारत को इसकी भरपाई करने के साथ ही यह भी देखना होगा कि इसका असर ईरान के साथ उसके द्विपक्षीय रिश्तों पर न पड़े। रूपये के नीचे गिरने की दूसरी वजह संस्थागत विदेशी निवेशों के भारतीय बाजारों से अपना धन वापस ले जाना भी है।

इसके अलावा अमेरिका और चीन के बीच चल रहे व्यापार युद्ध ने भी अनिश्चितताएं पैदा की हैं, और यह जल्द दूर होती नहीं दिख रही है। वेशक ट्रंप प्रशासन की नीतियों का असर दूसरी अर्थव्यवस्थाओं पर भी पड़ रहा है, लेकिन भारत अधिक समय तक रूपये के कमजोर होने का जोखिम नहीं उठा सकता, क्योंकि इसका असर देश के विकास से जुड़ी योजनाओं पर पडता है।

– सम्पादक

चाणक्य नीति–

तादृशी जायते बुद्धिर्व्यवसायोऽपि तादृशः।
सहायास्तादृशा एवं यादृशी भवितव्यता।।1।।

भावार्थ– जैसी होनेहारी होती है, मनुष्य की बुद्धि भी वैसी ही हो जाती है, उसे वैसे ही उपाय=साधन और सहायक भी मिल जाते हैं।

कालः पचति भूतानि कालः संहरते प्रजाः।
कालः सुप्तेषु जागर्ति कालो हि दुरतिक्रमः।।

भावार्थ– काल सब प्राणियों को खा जाता है, काल ही सब का संहार=नाश करता है, सबके सो जाने पर भी काल जागता रहता है, सचमुच काल बड़ा बलवान् है, काल को कोई लांघ नहीं सकता है।

गतांक से आगे .....

सत्यार्थ प्रकाश

अथ षष्ठ समुल्लासारम्भः

अथ राजधर्मान् वक्ष्यामः

उपस्थमुदरं जिह्वा हस्तौ पादौ च पञ्चमम्। चक्षुर्नासा च कर्णौ च धनं देहस्तथैव च।।५।।
अनुबन्धं परिज्ञाय देशकालौ च तत्तवतः। साराऽपराधौ चालोक्य दण्डं दण्डयेषु पातयेत्।।६।।
अधर्मदण्डनं लोके यशोघ्नं कीर्त्तिनाशनम्। अस्वर्ग्यञ्च परत्रापि तस्मात्तत्परिवर्यजेयत्।।७।।
अदण्डयान्दण्डयन् राजा दण्डयांश्चैवाप्यदण्डयन्। अयशो महद् आप्नोति नरकं चैव गच्छति।।८।।
वाग्दण्डं प्रथमं कुर्याद्धिग्दण्डं तदनन्तरम्। तृतीयं धनदण्डं तु वधदण्डमतः परम।।९।।

जो लोभ, मोह, भय, मित्रता, काम क्रोध, अज्ञान और बालकपन से साक्षी देवे वह सब मिथ्या समझी जावे।।१।।

इनमें से किसी स्थान में झूठ बोले उस को वक्ष्यमाण अनेकविध दण्ड दिया करे।।२।।

जो लोभ से झूठी साक्षी देवे उस से १५।⊨) (पन्द्रह रूपये दश आने) दण्ड लेवे, जो मोह से झूठी साक्षी देवे उससे ३=) (तीन रूपये दो आने) दण्ड लेवे, जो भय से मिथ्या साक्षी देवे उससे ३।) (सवा छः रूपये) दण्ड लेवे और जो पुरूष मित्रता से झूठी साक्षी देवे उससे १२।।) (साढ़े बारह रूपये) दण्ड लेवे।।३।।

जो पुरूष कामना से मिथ्या साक्षी देवे उससे २५) (पच्चीस रुपये) दण्ड लेवे, जो पुरुष क्रोध से झूठी साक्षी देवे उससे ४६।।⊨) छयालीस रूप्ये चौदह आने) दण्ड लेवे, जो पुरूष अज्ञज्ञनता से झूठी साक्षी देवे उससे ३) (तीन रुपये) दण्ड लेवे और जो बालकपन से मिथ्या साक्षी देवे तो उससे १।।-) (एक रुपया नौ आने) दण्ड लेवे।।४।।

दण्ड के उपस्थेन्द्रिय, उदर, जिह्व, हाथ, पग, आंख, नाक, कान, धन और देह ये दश स्थान हैं कि जिन पर दण्ड दिया जाता है।।५।।

परन्तु जो-जो दण्ड लिखा है और लिखेंगे जैसे लोभ के साक्षी देने में पन्द्रह रुपये दश आने दण्ड लिखा है परन्तु जो अत्यन्त निर्धन हो तो उस से कम और धनाढ्य हो तो उससे दूना, तिगुना तक भी ले लेवे अर्थात् जैसा देश, जैसा काल और जैसा पुरुष हो उस का जैसा अपराध हो वैसा ही दण्ड करे।।६।।

क्योंकि इस संसार में जो अधर्म से दण्ड करना है वह पूर्व प्रतिष्ठा वर्तमान और भविष्यत् में और परजन्म में होने वाली कीर्ति का नाश करनेहारा है और परजन्म में भी दुःखदायक होता है इसलिये अधर्मयुक्त दण्ड किसी पर न करे।।७।।

जो राजा दण्डनीयों को न दण्ड और अदण्डनीयों को दण्ड देता है अर्थात् दण्ड देने योग्य को छोड़ देता और जिस को दण्ड न चाहिये उस को दण्ड देता है वह जीता हुआ बड़ी निन्दा को और मरे पीछे बड़े दुःख को प्राप्त होता है इसलिये जो अपराध करे उसका सदा दण्ड देवे और अनपराधी को दण्ड कभी न देवे।।८।।

प्रथम वाणी का दण्ड अर्थात् उस की 'निन्दा' दूसरा 'धिक्' दण्ड अर्थात् तुझ को धिक्कार है तूने ऐसा बुरा काम क्यों किया, तीसरा उस से 'धन लेना' और 'वध' दण्ड अर्थात् उसको कोड़ा या बेंत से मारना वा शिर काट देना।।९।।

येन येन यथाङ्गेन स्तेनो नृषु विचेष्टते। तत्तदेव हरेदस्य प्रत्यादेशाय पार्थिवः।।१।।
पिताचार्य्यः सुहृन्माता भार्य्या पुत्रः पुरोहितः। नादण्डयो नाम राज्ञोऽस्ति यः स्वधर्मे न तिष्ठति।।२।।
कार्षापणं भवेद्दण्डयः यत्रान्यः प्राकृतो जनः। तत्र राजा भवेद्दण्डयः सहस्त्रमिति धारणा।।३।।
अष्टापाद्यन्तु शूद्रस्य स्तेये भवित किल्विषम्। षोडशैव तु वैश्यस्य द्वात्रिंशत्क्षत्रियस्य च।।४।।
ब्राह्मणस्य चतुःषष्टिः पूर्णं वापि शतं भवेत्। द्विगुणा वा चतुःषष्टिस्तद्दोषगुणविद्धि सः।।५।।
ऐन्द्रं स्थानमभिप्रेप्सुर्यशश्चाक्षयमव्ययम्। नोपेक्षेत क्षणमपित राजा साहसिंक नरम्।।६।।
वाग्दुष्टात्तस्कराच्चैव दण्डेनैव च हिंसतः। साहसस्य नरः कर्त्ता विज्ञेयः पापकृत्तमः।।७।।
साहसे वर्त्तमानं तु यो मर्षयति पार्थिवः। स विनाशं व्रजत्याशु विद्वेषं चाधिगच्छति।।७।।
न मित्रकारणाद्राजा विपुलाद्वा धनागमात्। समुत्सृजेत् साहसिकान् सर्वभूतभयावहान्।।९।।
गुरूं वा बालवृद्धौ वा ब्राह्मणं वा बहुश्रुतम्। आततायिनमायान्तं हन्यादेवाविचारयन्।।१०।।
नाततायिवधे दोषो हन्तुर्भवति कश्चन। प्रकाशं वाऽप्रकाशं वा मन्युस्तन्मृत्युमृच्छति।।११।।
यस्य स्तेनः पुरे नास्ति नान्यस्त्रीगो न दुष्टवाक्। न साहसिकदण्डघ्नौ स राजा शकलोकभाक्।।१२ मनु०।।

चोर जिस प्रकार जिस-जिस अंग से मनुष्यों में विरूद्ध चेष्टा करता है उस-उस अंग को सब मनुष्यों की शिक्षा के लिए राजा हरण अर्थात् छेदन कर दे।।१।।

चाहे पिता, आचार्य, मित्र, माता, स्त्री, पुत्र और पुरोहित क्यों न हो जो स्वधर्म में स्थित नहीं रहता वह राजा का अदण्डय नहीं होता अर्थात् जब राजा न्यायासन पर बैठ न्याय करे तब किसी का पक्षपात न करे किन्तु यथोचित दण्ड देवे।।२।।

क्रमशः

धरोहर...

आर्य जगत् के संगीत सम्राट– श्री पं० सत्यपाल जी पथिक

स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती
मंत्री, आर्य प्रतिनिधि सभा
उ०प्र०, लखनऊ
संचालक–गुरूकुल पूठ, हापुड़
मो० ६८३७४०२१६२

आर्य जगत् के देदीप्यमान नक्षत्र, सरस्वती के वरदपुत्र, कविता कामिनी कोविद, पुरोहित एवं विद्वद् वरेण्य, सादा जीवन उच्च विचारों के धनी, महर्षि के मानस पुत्र, मधुर कण्ठ से संगीत के संवाहक, नूतन विद्या के परिषेक्ता, वेदपथ के पथिक, श्री पं० सत्यपाल जी पथिक आज आर्यजगत् की शान और पहिचान हैं आबाल वृद्ध सभी आपके दर्शनों के अभिलाषी रहते हैं आपकी मधुर वाणी का रसपान करके तृप्ति एवं सन्तोष का अनुभव करते हैं। आपकी योग्यता एवं ऊहा आपके प्रत्येक गीत में साक्षात् अनुभव होती है।

मुझे स्मरण हो रहा है जब कैसेट एवं टेपरिकार्ड नहीं थे श्री पन्नालाल जी पीयूष अजमेर वालों की आवाज में ईश्वर स्तुति प्रार्थना एवं उपासना का पद्यानुवाद रिकार्डर द्वारा लोग सुनकर प्रसन्न होते थे तभी आपकी मधुर वाणी में कैसेट तैयार हुआ था और लोग आर्य समाज के सम्मेलन एवं साप्ताहिक सत्संगों से पूर्व सुनाकर करते थे और तब से आज तक भी उसी श्रद्धाभाव से सुन रहे हैं यह आपकी वाणी का माधुर्य एवं गीत की सुन्दर भाषा का ही प्रभाव है। आर्य समाज के उपदेशक आज भी आपके ही गीत गाकर आर्य जनता से सम्मान प्राप्त कर रहे हैं। आपके प्रत्येक गीत में यथार्थ अनुभव इसलिए होता है कि ये गीत साधना द्वारा प्रभुदत्त ऊहा से ज्ञानरूपी सागर से मोती रूपी शब्द निकलते हैं –

"भगवान् आर्यों को पहली लगन लगा दे।
वैदिक धर्म की खातिर मरना इन्हें सिखा दे।।

इस पूरे भजन को जो सुन लेगा वह सच्चा आर्य स्वतः ही बन जायेगा आर्य समाज का पूरा इतिहास महापुरूषों का त्याग समर्पण एवं उनका बलिदान साक्षात् दिखाई दे रहा है भजन में समग्रता और सरलता के भी साक्षात् दर्शन होते हैं आपके गीतों में वेदमन्त्रों के भाव और छवि स्पष्ट अनुभव की जा सकती है। मेरे स्वभाव में संगीत विद्या नहीं है लेकिन आपके भजनों को मैं सत्संग अथवा उपदेश और वेदमन्त्र मानकर ही पढ़ता हूँ तथा उपदेशकों से सुनने में भी रूचि बनती है। पूरे जीवन का सार–उपदेश किस प्रकार भरा हुआ है इस भजन को देखेंगे तो आप स्वयं आश्चर्य युक्त हो जायेगें–

बुराईयों से बचो–

'बुराईयों को कभी जीवन में अपनाना नहीं चाहिए।'
यह मीठा ज़हर होता है इसे खाना नहीं चाहिए।
बुरी संगत जहाँ देखो वहाँ जाने से शरमाओ,
जहां सत्संग होता हो तो शरमाना नहीं चाहिए।
कोई कितना भी क्यों न हो बड़े घर बार धन वाला,
जहाँ स्वागत नहीं होता वहाँ जाना नहीं चाहिए।
लगें पेड़ों पे फल ज्यों ही झुकें सब डालियां उनकी,
यहाँ ऐश्वर्य को पाकर के इतराना नहीं चाहिए।
अगर कुछ दे नहीं सकते तो कहदो माफ़ कर बाबा,
मगर दुत्कार कर याचक को लौटाना नहीं चाहिए।
निरादर से मिले दौलत ज़माने की तो मत छूना,
मिले जो प्रेम से तिल भी तो ठुकराना नहीं चाहिए।
पड़ा भट्टी में जब सोना "पथिक" वह बन गया कुन्दन,
प्रभु जब कष्ट देता है तो घबराना नहीं चाहिए।

यह भजन अकेला ही इनकी योग्यता –कवित्व शक्ति की ऊहा प्रभु प्रदत्त सरस्वती के वरदान का परिचायक है जैसे रवीन्द्र नाथ टैगोर को एक कहानी की कविता पर ही नोबेल पुरस्कार मिल गया था इसी प्रकार आपके भी इस भजन पर सरकार की ओर से पुरस्कार मिलना चाहिये श्री चन्द्रधर शर्मा जी गुलेरी की मात्र ३ कहानियों ने उन्हें साहित्यकार की श्रेणी में सर्वोच्च सम्मान मिला था उसी प्रकार आ० सत्यपाल जी पथिक उस प्रतिभा के धनी है जिसकी उपमा वे स्वयं हैं।

इतने भाव पूर्ण गीतों को गाकर अपनी वाणी के माधुर्य से लोगों को प्रभावित करते हैं कि वातावरण वैसे ही हो जाता है एक–एक शब्द नवसृजित होकर किसी कोष से स्वतः प्रकट होकर बाहर आ रहा है जैसे संस्कृत कविमाघ के विषय में आता है कि कवि लोग शब्द चिन्तन द्वारा खोजते हैं किस शब्द को कहाँ समायोजित करूं लेकिन माघ जी के सामने शब्द आकर प्रार्थना करते थे कि गुरूजी हमें भी अपनी कृपा का पात्र बना दो और वे उनकी वाणी के चारों तरफ आकर उन्हें सुशोभित किया करते थे यह अतिशयोक्ति अलंकार में आता है इसी प्रकार मैं विश्वास पूर्वक यह कह सकता हूँ के सुन्दर शब्दों की शब्दावली श्री पथिक जी की यात्रा का पाथेय बनकर इनकी पथयात्रा में सहयोगी बनते हैं कि सुन्दर कविता का निर्माण स्वतः अन्दर से निकलता रहता है यह एक अजसु प्रवाह है आपने हजारों गीतों का सृजन किया है कवि स्रष्टा होता है कवि एक प्रजापति होता है कवितायें इसकी प्रजा होती है आप जिस विषय में भी चिन्तन करते हैं वह अद्वितीय ही होता है जैसे पितृयज्ञ पर माता–पिता के विषय में लिखा है।

हम कभी माता–पिता का ऋण चुका सकते नहीं।

इनके तो अहसान इतने कि हम सुना सकते नहीं।।

इस पूरे भजन का एक–एक शब्द यदि कोई भी सुन लेगा वह माता–पिता को कभी दुःखी अपमानित नहीं करेगा आज की यह सामाजिक समस्या है परिवारों का वातावरण विषाक्त है उस वातावरण को शुद्ध करने के लिए भजन संजीवनी बूटी की तरह काम करेगा और सन्तान में सेवा भाव पैदा करेगा यह मिशनरी भावनाओं का प्रत्यक्ष प्रमाण है इसी प्रकार युवाओं कविता रूप में प्रकट होती है जैसा लिखा है – यन्मनसा ध्यायते तद् वाचा वदति–यद् वाचा वदति तत्कर्मणा करोति।।

जैसा व्यक्ति मन से सोचता है वैसा ही वाणी से भी बोलता है जैसा बोलता है फिर वैसा ही कर्म करने लगता है कवि की मानसिक शक्ति वाणी पर आकर सरस्वती रूप धारण करती है उसी से उसके व्यक्तित्व का परिचय मिलता है।

इस दृष्टि से पथिक जी की उदार एवं सुधार मनोभावनाओं का उनके पवित्र चिन्तन का, उनके स्वाध्याय एवं योग्यता का परिचय उनके साहित्य द्वारा सहजभाव से प्राप्त किया जा सकता है। आप द्वारा रचित? पथिक भजनावली पथिक भजन वर्षा ३ पथिक भजनामृत ४. पथिक भजनानन्द, ५. पथिक भजनोद्यान, ६. पथिक भजन भास्कर ७. पथिक भजनाञ्जली ८. पथिक भजनोपहार ६. पथिक भजन वाटिका १०. महर्षि जीवन गाथा, ११. पथिक भजन संग्रह १२ झोले में है, १३. पथिक भजन सर्वस्व २ खण्डों में तथा भजनों ६ आडियो कैसेट देश–विदेश में प्रसिद्धि को प्राप्त है।

आपका जन्म वर्तमान पाकिस्तान के जिला स्याल कोट के ग्राम दुलम में १३ मार्च सन् १६३८ में हुआ माता श्रीमती कर्म देवी जी तथा पिता जी श्री लालचन्द्र जी के घर को सुशोभित किया। श्रीमती कृष्णावन्ती के साथ उसका विवाह हुआ। परिवार में ४ पुत्र एवं ४ पुत्रियां हैं जिसमें आज दिनेश आर्य पथिक जी भी आपके विचारों को सुरखित रखते हुए आर्य समाज का प्रचार–प्रसार पूरे देश में कर रहे हैं ऐसे पुत्र प्रभु सभी को दें यह दोनों का ही सौभाग्य है अनुव्रतः पितुः पुत्रो...। वेद के आदेश को सार्थक किया है आर्य समाज के अधिकारियों से मेरा निवेदन है कि उनका पूरा लाभ उठावें आज ८४ वर्ष की आयु में भी आप अपने मधुर कण्ठ से भजनोपदेश करते हैं तथा पूरे देश के कोने–कोने की आर्य समाजों के अतिरिक्त विदेशों में भी सिंगापुर जाकर वेद प्रचार किया है।

आपकी शिक्षा अमृतसर में मैट्रिक–विशारद एवं संस्कृत शिक्षा से सिद्धान्त शास्त्री की परीक्षाओं के साथ–साथ वैदिक

शेष पृष्ठ ४ पर

पृष्ठ ३ का शेष

श्री पं० सत्यपाल ...

कर्मकाण्ड का प्रशिक्षण प्राप्त किया और पुरोहित पर सुशोभित लम्बे समय तक रहे आपको आर्य समाज १९३८ हापुड़ के वार्षिक सम्मेलन पर प्रथम बार सुना था उसके बाद प्रतिवर्ष कई स्थानों पर दर्शन लाभ मिलता रहता है टंकारा महर्षि जन्मभूमि पर आप प्रतिवर्ष जाते हें इसी प्रकार पूज्य स्वामी प्रणवानन्द जी सरस्वती द्वारा संचालित गुरूकुलों की संख्या ६ हैं उसमें गुरूकुल गौतम नगर, मंझावली, पौन्धा में प्रतिवर्ष आपको सुनने का सौभाग्य प्राप्त कर रहा हूं जब भी सुनते हैं मन में ऊर्जा मिलती है इस वर्ष म० धर्मपाल आर्य (एम.डी.एच.) वालों का जन्मदिन तालकटोरा स्टेडियम में मनाया जा रहा था तभी संयोजक विनय आर्य जी को आप दिखाई दिये आपके मंच पर बुलाया आपने हम कभी मातापिता का ऋण चुका सकते नहीं...? जब यह गीत गाया तो पूरी स्टेडियम तालियों से गूंज उठी तथा बाद में भावुक हो गई महाशय जी भी अपने आंसू पोछ रहे थे आपकी वाणी में वह जादू है जो शीघ्र लाभ करता है आपको आर्य समाज के मंचों पर बुलाकर लोग धन्य हो जाते हैं क्योंकि आपकी कैसे सभी आर्य समाजों में प्रातः काल सुनी जाती हैं।

आप अपनी वाणी से प्रतिदिन आर्य सामाजों में आबाल वृद्ध को प्रभावित करते हैं। आपको सम्मान पत्र–अभिनन्दन पत्र एवं शाल आदि से स्थान–स्थान पर सम्मान करके अपने को गौरवान्वित अनुभव करते हैं। आपके जीवन की सरलता से भी लोग अधिक प्रभावित होते हैं इतने बड़े व्यक्ति इतने सीधे–सादे और सरल भी हो सकते हैं ऐसी कोई कल्पना भी नहीं कर सकता अतः आपको चरित्र–व्यवहार दिनचर्या सभी एक आदर्श हैं आप आर्य भजनों पदेशकों के लिए प्रेरक पुरूष हैं आपके जीवन एवं आदर्श की प्रेरणा से आर्य जगत् में उपदेशकों में परिवर्तन सम्भव है।

आर्य जगत् को प्रकाशित एवं प्रभावित करने के लिए आर्य भजनोंपदेशक विद्यालय की स्थापना की जाये तथा उसमें आपका निर्देशन हो शेष समय का लाभ भावी पीढ़ी के निर्माण के लिए यह कार्यक्रम वरदान सिद्ध हो सकता है। मेरे एक परिचित मित्र का पुत्र गुरूद्वारा सरकड़ा कमाल अमरोहा में संगीत प्रशिक्षण ले रहा है मुझे वहां जाने का अवसर मिला वहां देखा तो लगभग २० छात्र थे उन्हें गुरूद्वारा ही सब खर्च देता है फिर उन्हें गुरूद्वारों में ही योग्यतानुसार देश–विदेश में नियुक्ति की जाती है इस विद्या को आर्य समाज द्वारा किसी भी समाज अथवा गुरूकुल में प्रारम्भ किया जा सकता है और अच्छे संगीतज्ञ एवं विद्वानों का लाभ आर्यसमाज को मिल सकता है वे ही प्रमाणिक उपदेशक मान्य होगें तो आज जो कुछ सुनने को मिलता है।

वह सब व्यक्तिगत पुरूषार्थ का परिणाम है आर्य समाज संगठन का इसमें कोई सहयोग नहीं है प्रशिक्षण आर्य समाज की छवि बनायेगा ऐसा मेरा पूरा विश्वास है पुराने आर्य उपदेशकों के परिवारों से भी सम्पर्क बनाया जाये ताकि परिवार उनकी परम्परा में यदि बच्चे तैयार हो सके तो यह भी चमत्कार ही होगा आदरणीय पथिक जी के विषय में लोग चाहें पी.एच.डी. की जा सकती है इतना साहित्य आपने तैयार किया है प्रभुवन्दना, युवा पीढ़ी, समाज सुधार आदि–आदि बहुत विषय है कभी फिर विस्तार से लिखा जायेगा। मेरे मन में जो विचार रूपी पुष्प उनके विषय में मैंनें व्यक्त किये हैं उन्हें भावुक हृदय के भाव समझ कर स्वीकार करेंगे मैं ऐसे देव पुरूष की लम्बी आयु और अच्छे स्वास्थ्य की कामना करता हुआ आर्यप्रतिनिध सभा उ०प्र० की ओर से अपका हार्दिक अभिनन्द एवं वन्दन करता हूँ। भूयश्च शरदः शतात्।।

मित्र का परामर्श

संकलन– आचार्य रणधीर शास्त्री विद्याभास्कर, मरेठ

दुर्गादास नाम का एक धनी किसान बड़ा आलसी प्राणी था। न कभी अपने खेत देखने जाता न खलिहान ही देखता। अपनी गाय-भैंसों की भी वह खोज-खबर नहीं रखता था। इतना ही नहीं, अपने घर के सामान की भी उसको कोई परवाह नहीं रहती थी, कभी उनकी देखभाल नहीं करता था। सब काम वह नौकरों पर छोड़ देता था। उसके इस प्रकार आलसी बनने और प्रबन्ध न करने से घर की स्थिति दिन-प्रति दिन बिगड़ती जा रही थी। खेती में उसको हानि होने लगी। गायों के दूध-घी से भी किसी प्रकार का लाभ होना बन्द-सा हो गया था।

एक दिन दुर्गादास का मित्र हरिश्चन्द्र उसके घर पर आया। उसने जब दुर्गादास के घर का हाल देखा तो उसे आश्चर्य होने लगा। वह समझ गया कि यदि वह दुर्गादास को समझाता है तो वह इतना आलसी है कि अपना स्वभाव बदलेगा नहीं। फिर भी उसने अपने मित्र की भलाई सोची और उससे कहा, "मित्र! तुम्हें संकट में देख कर मुझे बड़ा दुःख हो रहा है। तुम्हारी दरिद्रता को दूर करने का एक सरल-सा उपाय मैं बताना चाहता हूँ।"

"तुम्हारी बड़ी कृपा होगी। वह उपाय तुम मुझे बताओ। मैं उसे अवश्य करूंगा।" "सुना है कि सब पक्षियों के जागने से पूर्व ही मानसरोवर पर रहने वाला एक सफेद हंस पृथ्वी पर आता है। दोपहर दिन चढ़े वह लौट जाया करता है। किन्तु यह कोई नहीं बता सकता कि वह कब कहां जायेगा, लेकिन जो कोई उसका दर्शन कर लेता है, उसको कभी किसी बात की कमी नहीं होती।"

दुर्गादास यह सुनकर बड़ा उत्साहित हुआ और कहने लगा, "कुछ भी हो, मैं उस हंस के दर्शन अवश्य ही करूंगा।" यह बता कर हरिश्चन्द्र चला गया। दुर्गादास को उसका कथन-स्मरण रहा और दूसरे दिन प्रातःकाल वह सब के जागने से पहले जागर घर से बाहर निकल पड़ा।

हंस की खोज में वह अपने खलिहान में गया। वहां जाकर उसने देखा कि कोई आदमी उसके ढेर में से गेहूँ चुरा कर अपने ढेर में मिला रहा है।

दुर्गादास को देख कर वह लज्जित हो गया और क्षमा मांगने लगा। दुर्गादास ने उस समय उसको क्षमा कर दिया। गेहूं समेट कर वह खलिहान से घर आ गया। घर आकर वह गऊशाला में गया। वहां उसने देखा कि ग्वाला गाय का दूध दुह कर अपनी पत्नी के लोटे में डाल रहा है।

दुर्गादास ने उसे डाँटा। उसने भी क्षमा याचना की।

दुर्गादास भीतर गया और दूध पिया। जलपान किया और फिर डंडा उठा कर खेत की ओर चल दिया। वहां जाकर उसने देखा कि अभी तक भी खेत पर काम करने वाले श्रमिक नहीं आये हैं। वह वहीं रूक गया। जब श्रमिक आये तो उसने उन्हें देर से आने का उलाहना दिया और खूब डांड-फटकार लगाई।

इस प्रकार प्रतिदिन वह कहीं न कहीं जाता रहता था और देखता था कि जहां वह जाता है वहीं उसको हानि पहुंचाई जा रही है। किन्तु उसने इस प्रकार नियमित रूप से जाने से इस प्रकार की चोरियां बन्द हो गयीं और उसकी हानि भी रूक गयी।

सफेद हंस की खोज में दुर्गादास प्रतिदिन- उठकर घूमने जाने लगा। नौकर-चाकरों में भय व्याप्त हो गया कि न जाने कब स्वामी आकर उनकी चोरी पकड़ ले। इसलिए उन्होंने चोरी और आलस छोड़ दिया, सब ठीक तरह से काम करने लगे। उसके यहां चोरी होना तो बन्द हुआ ही, साथ ही वह निरोगी हो गया था। प्रातःकाल उठकर घूमने जाने से उसका स्वास्थ्य भी ठीक हो गया। अब उसको सब खेतों से यथोचित अन्न, गायों से यथोचित दूध आदि सब कुछ ठीक-ठीक मिलने लगा था।

उसके मित्र हरिश्चन्द्र को उसकी चिन्ता लगी थी, इसलिए वह एक दिन फिर उसका समाचार जानने के लिए उसके घर आया। दुर्गादास उसको देखकर प्रसन्न हो गया और कहने लगा, "मित्र! सफेद हंस तो मुझे अब तक नहीं दिखा। जिस दिन तुम मुझे बता गये थे उसके दूसरे दिन से ही मैंने उसकी खोज प्रारम्भ कर दी थी। किन्तु उसकी खोज में लगने से मेरा सारा घर और काम-धन्धा व्यवस्थित हो गया और मुझे जो हानि हो रही थी वह रूक गयी तथा पूर्ववत लाभ होने लगा है।"

हरिश्चन्द्र को हंसी आ गयी। बोला-" परिश्रम करना ही वह सफेद हंस है। परिश्रम के पंख सदा उजले होते हैं। जो स्वयं परिश्रम न करके अपना काम नौकरों पर छोड़ देता है, वह हानि उठाता है।

"मैं तुम्हारी स्थिति जानता था। और यह भी जानता था कि यदि तम्हें आलस छोड़ने का परामर्श देता तो तुम उसे स्वीकार नहीं करते और आलसी ही बने रहते। किन्तु मैंने तुम्हें एक लालच दे दिया और तुम उसके अनुसार काम करने लगे तो तुम्हारा सब कुछ व्यवस्थित हो गया।

"परिश्रम करना ही मनुष्य जीवन का लक्ष्य होना चाहिए। दूसरों पर निर्भर रह कर हानि होती है, लाभ नहीं।"

पाखण्ड–खण्डन– आज की आवश्यकता

– प्रताप कुमार 'साधक'

देश और समाज को धर्म का वास्तविक स्वरूप बतलाने के लिए जब वेदज्ञ योगीराज ऋषि दयानन्द सरस्वती कार्यक्षेत्र में उतरे थे, तो सर्वप्रथम हरिद्वार में कुंभ मेले पर 'पाखण्ड–खण्डिनी पताका' फहराई थी। आशय स्पष्ट था कि धर्म के सत्य स्वरूप को समझने के लिए पाखण्ड और अन्धविश्वास से मुक्ति पाना अनिवार्य है। यही दो ऐसे प्रदूषण हैं जो धर्म को सम्प्रदाय, मजहब, पंथ और मत में परिवर्तित कर देते हैं। इसलिए महर्षि ने अपने अमर ग्रन्थ 'सत्यार्थ प्रकाश' में जहाँ दस समुल्लास वैदिक सिद्धान्तों पर लिखे, वहीं चार समुल्लासों में अन्धविश्वास और पाखण्ड–खण्डन पर लेखनी चलाई। यह सत्य ही कि बिना अवतारवाद और मूर्तिपूजा से छुटकारा पाए ईश्वर के सच्चे स्वरूप को समझा नहीं जा सकता है। और न उसकी उपासना ही की जा सकती है। इसी प्रकार दुष्कर्मों की क्षमा का मन स्वीकार करते हुए पापों से बचने का प्रयास नहीं किया जाएगा। चमत्कारों को स्वीकार करने से प्रकृति के अटल नियमों पर प्रश्न चिन्ह लगेंगे और किसी मनुष्य को गुरू आदि मानकर उस पर अन्धविश्वास करने से धोखा ही खाना पड़ेगा। इसके अनेक उदाहरण हमारे समाने आते रहते हैं।

यदि हिन्दू समाज के बारे में विचार करें तो उपरोक्त बुराइयों के कारण ही आज भारत में बहुसंख्यक माना जाने वाला हिन्दू समाज अनेक सम्प्रदाय, मत, पंथ में विभाजित होकर उपेक्षित और प्रताड़ित हो रहा है। देश या प्रदेश ही नहीं, एक ही हिन्दू परिवार के सदस्य अलग–अलग मतों के मानने वालों का एक इष्ट देव नहीं, एक धार्मिक पुस्तक नहीं, एक उपासना पद्धति नहीं, एक समान आहार नहीं तो, एक जैसे विचार क्योंकर हो सकते हैं? फिर विचारों की भिन्नता के रहते संगठन के स्थान पर विघटन, प्रेम और सौहार्द के स्थान पर द्वेष भाव तथा सहयोग स्थान पर विरोध की भावना रहने पर कैसा आश्चर्य?

यह पूर्णतः सत्य है कि धर्म हिन्दू ही नहीं, मानव समाज को एक सूत्र में बांधने वाला है, जबकि सम्प्रदाय, मत, पंथ समाज को विभाजित करते हैं। अतः इनके द्वारा प्रचारित और प्रसारित पाखण्ड और अन्धविश्वासों को मिटाना आर्य समाज का प्रमुख दायित्व है, क्योंकि आर्यसमाज का उद्देश्य ही 'संसार का उपकार करना' तथा 'सबकी उन्नति में अपनी उन्नति समझना' है, जो समाज से ढोंग, पाखण्ड तथा अन्धविश्वास को मिटाए बिना सम्भव नहीं होगा। आर्यसमाज–आन्दोलन के प्रारम्भिक काल में इस पर विशेष बल दिया गया जो धीरे–धीरे उपेक्षित होता गया। आर्यसमाज द्वारा अछूतोद्धार, विधवा–विवाह, बालविवाह, निषेध जैसे सामाजिक आन्दोलनों को तो पर्याप्त सफलता प्राप्त हुई, क्योंकि उनके पीछे राजकीय आदेशों को सहयोग था, किन्तु साम्प्रदायिक पाखण्ड और अन्धविश्वास पर अंकुश लगाने में ऐसा न होने से उसका क्षेत्र औरा बढ़ता ही जा रहा है। 'दैनिक जागरण' समाचार पत्र के १० अक्टूबर २०१३ के अंक में यह पढ़कर मैं स्तब्ध रह गया कि व्यक्ति ने अपने नौ मास के बच्चे की बलि दे दी। यद्यपि तांत्रिक क्रियाओं के अन्तर्गत पशु–पक्षियों ही नहीं, मनुष्यों की बलि देना अथवा शरीर के किसी अंग को काटकर मूर्तियों पर चढ़ाना असामान्य घटना नहीं है, जिसमें शिक्षित तथा उच्च पदस्थ व्यक्ति भी सम्मिलित पाए जाते हैं। इसी प्रकार बाबा–वेशधारी ठगों और दुराचारियों पर अन्धश्रद्धा रखकर न केवल आर्थिक ठगी, अपितु शारीरिक शोषण (यौनशोषण) के शिकार होने वाले पुरूषों महिलाओं की संख्या भी कम नहीं है। यद्यपि देश के कानून के अनुसार आरोप सिद्ध होने पर ऐसे पाखण्डियों को दण्ड दिया जाता है किन्तु उससे पीड़ित की पीड़ा तो समाप्त नहीं हो जाती। अतः आवश्यकता इस बात की है कि लोगों में ऐसी धार्मिक जागरूकता पैदा की जाए जिससे वे पाखण्डियों के चंगुल में फंसे ही नहीं। यद्यपि यह कार्य अत्यन्त कठिन और श्रम–साध्य है, जिसके लिए लाभान्वित हो रहे पाखण्डियों ही नहीं, अनेकों साम्प्रदायिक गुटों का विरोध भी सहन करना पड़ेगा। तथापि ऐसे सर्वहितकारी आन्दोलन की अगुवाई देशोद्धारक, निर्भीक सन्यासी महर्षि दयानन्द सरस्वती के अनुयायी आर्यजन न करेंगे तो कौन करेगा?

वस्तुतः आर्य समाज एक धार्मिक, सामाजिक और राष्ट्रीय आन्दोलन है, जिसका मुख्य कार्य ही कुरीतियों को हटाकर धर्म का शुद्ध स्वरूप समाज के सम्मुख रखना है। इसके लिए आवश्यक है कि आर्य समाज के कार्यकर्ता विशेषकर विद्वान् प्रचारक, संन्यासी और पदाधिकारी अपने दोष रहित, जीवन और निःस्वार्थ क्रिया–कलापों से समाज में अपनी अलग प्रतिष्ठित छवि बनाएं। साथ ही आर्य समाजों व उनसे सम्बन्धित आर्य संस्थाओं को समाज सुधार का प्रबल माध्यम बनाकर संगठित रूप से पाखण्ड–खण्डन को प्रमुखता देनी होगी। किन्तु खेद है कि आर्य समाजें, संस्थाएं और सभाएं प्रायः इस अत्यावश्यक धन, सम्पत्ति एकत्र करना और कभी–कभी सम्मेलन करना मात्र रह गया है। अतः प्रभावशाली राजनेता तथा धनी व्यक्ति इनके पदाधिकारी बन रहे हैं, जो वैदिक विचारों के प्रसारक तो क्या उनके अनुयायी भी नहीं हैं। एक प्रसिद्ध गुरूकुल सहित कुछ बड़ी आर्य समाजों के उत्सवों में मेरे प्रवचनों में पाखण्ड और अवैदिक मतों का शालीन शब्दों में किए गए खण्डन पर उनके द्वारा अप्रसन्नता व्यक्त की गई। आर्य उपदेशकों को प्रायः सलाह क्या, निर्देश दिया जाता है कि वे खण्डनात्मक प्रवचन न दें। इसके लिए वे तर्क देते हैं कि खण्डनात्मक प्रवचनों से श्रोतागण रूष्ट होकर आर्यसमाज से दूर हो जाते हैं।

किन्तु मेरा अनुभव है कि अन्य मतावलम्बियों के सत्संगों के विरूद्ध आर्यसमाज के उत्सवों में तर्क–प्रिय जिज्ञासु युवक कुछ 'नवीन' सुनने के लिए ही आते हैं और उनमें से अनेकों प्रभावित होकर सत्यता को स्वीकार भी करते हैं। मैंने अपने बाल्यकाल में आर्य विद्वानों के खण्डन–मण्डन वाले प्रवचनों को सुनने के लिए वार्षिकोत्सवों पर भारी भीड़ उमड़ते देखा है। महर्षि के खण्डनात्मक प्रवचनों को सुनने के लिए श्रोताओं की भीड़ा और उनके प्रभाव से पाखण्ड त्यागने वालों की संख्या क्या कम होती थी?

अतः मैं महर्षि के सच्चे अनुयायी आर्यों से निवेदन करता हूं महर्षि के सपनों को साकार करने के लिए सर्वप्रथम अपने संगठन को शुद्ध और सुदृढ़ करें। इसके लिए आर्यसमाजों को सक्रिय करें, उन्हें धन–लोलुप, पद–लोलुप पदाधिकारियों से मुक्त कराएं तथा साप्ताहिक अधिवेशनों व सम्मेलनों में सैद्धान्तिक प्रवचनों को वरीयता दें। आर्य विद्वानों को भी चाहिए कि वे महर्षि दयानन्द द्वारा बतलाए गए वैदिक विचारों को ही स्पष्ट करें, उनके विपरीत अपने विचार न दें और न अपने को अधिक विद्वान् सिद्ध करने के लिए अन्य आर्य विद्वान् की निंदा करें। मेरा मानना है कि वेदों, शास्त्रों, उपनिषदों का सार ऋषि कृत सत्यार्थ–प्रकाश व ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका में उपलब्ध है, अतः इनके पठन–पाठन एवं प्रचार की समुचित व्यवस्था करने से पाखण्ड व अन्धविश्वास मिटाने में सहायता मिलेगी।

और अंत में एक चेतावनी आर्यसमाजियों में भी गुरूडम् तथा अन्धविश्वास पनप रहा है। इसे रोके बिना तो वही बात होगी कि–बड़े गौर से सुन रहा था ज़माना। हमीं सो गए दास्ताँ कहते–कहते।।

प्रेरक प्रसंग–

परनिन्दा से बचो

संकलन– आदित्य प्रताप सिंह, तिलहर

कहा जाता है कि प्रजापति ब्रह्मा इस सृष्टि के कर्ता हैं। किन्तु मनुष्य को उन्होंने विचित्र प्राणी के रूप में देखा और एक बार अपने पास बुलाकर पूछा, "बोलो, तुम क्या चाहते हो?"

"मैं उन्नति करना चाहता हूँ, सुख–शान्ति चाहता हूं, और चाहता हूं कि सब लोग मेरी प्रशंसा ही करें। ब्रह्म जी सम्मुख दो थैले रख दिये। कहा, "इन थैलों को ले लो। इनमें से एक थैले में तुम्हारे पड़ोसी की बुराइयां भरीपड़ी हैं, उसे पीठ पर लाद लो और उसे सदा बन्द ही रखना। न तुम स्वयं देखना और न किसी दूसरे को देखने देना। "ये जो दूसरा थैला है, इसमें तुम्हारे दोष भरे पड़े हैं। उसे सामने लटका लो और बार–बार खोल कर नित्यप्रति देख लिया करो। दूसरे देखना चाहें तो उनको भी दिखा देना।"

मनुष्य ने दोनों थैले उठा लिए। किन्तु वहीं पर उससे एक भूल हो गयी। उसने अपनी बुराइयों का थैला तो पीठ पर लाद लिया और उसका मुंक बन्द कर दिया। अपने पड़ोसी की बुराइयों से भरा थैला उसने सामने लटका लिया। उसका मुंह खोल कर वह उसे नियमित रूप से देखता रहता है और दूसरों को भी दिखाता रहता है। इससे उसने जो वरदान मांगे थे वे भी उल्टे हो गये। वह अवनित करने लगा। उसे दुःख और अशान्ति मिलने लगी। सब लोग उसको बुरा बताने लगे और उसकी बुराइयां भी करने लगे। उसका जीवन संकटमय हो गया।

मनुष्य यदि उन्नति करना चाहे तो आज वह मनुष्य की उस भूल को सुधार ले, उसकी उन्नति हो सकती है। उसको सुख–शान्ति मिलेगी। संसार में वह प्रशंसा का पात्र बन सकता है।

मनुष्य को केवल करना यह है कि अपने पड़ोसी और परिचितों के दोष देखना बन्द कर और अपने दोषों पर सदा दृष्टि रखे।

अवतारवाद किसे .....

पृष्ठ १ का शेष

तमेव शरणं गच्छ सर्वभावेन भारत।।

अर्थात्– हे अर्जुन! ईश्वर सब प्राणियों के हृदय में विराजमान है। हेभारत! तुम सब प्रकार से उसी की शरण में जाओ तभी तुमको शान्ति प्राप्ति होगी।

प्रश्न– लोग कहते है कि रावण और कंस को मारने के लिए ईश्वर ने राम और कृष्ण का रूप धारण किया था, क्या यह बात गलत है?

उत्तर– हाँ बिल्कुल गलत। भला यह तो एक मोटी सी बात है कि दुनियां में जो जन्मा है वह मरेगा ही। फिर जब रावण और कंस जन्मे थे तो उनका मरना निश्चित ही था, उनके मारने के लिए भला ईश्वर को क्यों जन्म लेना पड़े? दूसरे ईश्वर एक क्षण में भूचाल से व बिजली से व जल–प्रलय से सारी सृष्टि का नाश कर सकता है, उसके लिए यह कहना कि वह कंस और रावण जैसे तुच्छ प्राणियों को नहीं मार सकता, उसका महा अपमान करना है। इस बात को कोई बुद्धिमान् पुरूष नहीं मान सकता।

प्रश्न– यदि ईश्वर का अवतार मानें तो क्या दोष है?

उत्तर– ईश्वर का अवतार मानने में अनेक दोष आते हैं, जैसे –

१. ईश्वर का अवतार मानना वेद–शास्त्र के विरूद्ध है, इस लिए हम वेदविरोधी बनकर पाप के भागी बनते हैं।

२. ईश्वर सर्वत्र व्यापक है, उसका कहीं आना–जाना और उतरना चढ़ना नहीं हो सकता, क्योंकि जो कोई चीज जहां पहिले नहीं होती वह वहां आती है। ईश्वर सब जगह तो पहले से ही मौजूद है, न वह गर्भ में आता है, न जाता है।

३. गर्भ में आना या शरीर धारण करना किन्हीं पाप कर्मों का फल होता है, तो ईश्वर ने कौन से पाप किये हैं, जिनका उसे फल मिले?

४. ईश्वर सर्वज्ञ है। वह राम और कृष्ण की तरह से अज्ञान में कैसे पड़ सकता है? राम तो सीता को ढूंढने में और लंका के युद्ध में लक्ष्मण के बाण लगने पर व्याकुल होकर रोते हुए कहते है–

जो जनतेहुँ बन बन्धु बिछोहू। पिता वचन मनतेहँ नहि ओहू।।

अस विचारि जिय जागहु ताता। मिलहि न जगत् सहोदर भ्राता।।

भला ईश्वर भी कहीं इस तरह विलाप करता है और अपनी करनी पर पछता सकता है?

५. फिर यह लोग राम को भी अवतार मानते हैं और परशुराम को भी। राम भी ईश्वर और परशुराम भी। वे दोनों एक समय में कैसे हो गये? और उनमें विवाद क्यों हुआ? क्या ईश्वर अपने आपको नहीं पहचान सका?

६. फिर प्रश्न यह है कि उनका शरीर ईश्वर था या आत्मा? अगर कहो शरीर, तो हो नहीं सकता, क्योंकि शरीर जड़ है, नाश होने वाला है और अगर कहो आत्मा, तो भी नहीं हो सकता क्योंकि उनका आत्मा शरीर में बद्ध था और ईश्वर किसी एक जगह में बद्ध नहीं हो सकता।

७. फिर वे लोग ईश्वर के बहुत से अवतार मानते हैं। ईश्वर कहीं कछुआा बना, कहीं मछली बना, कहीं सूअर बना, कहीं बुटकुन बौना बना और राजा बलि को छला इत्यादि। ये बातें परमपिता ईश्वर के लिए कहना उसके लिए महा अपमानजनक है। अगर कोई कहे कि अमुक बादशाह कछुआ था, सूअर बना तो क्या बादशाह उन कहने वालों से नाराज नहीं होगा? इसी प्रकार इन अपमान करने वालें से क्या ईश्वर अप्रसन्न नहीं होता है?

८. अगर हम राम और कृष्ण को महापुरूष मानें तो हम भी उन जैसे बनने का प्रयत्न करें क्योंकि–

"Lives of great men all remind us, We can make our lives sublime." अर्थात महापुरूष के जीवन को देखकर हम भी अपने जीवन को श्रेष्ठ बना सकते हैं। लेकिन जब हम उनको ईश्वर मान लेते हैं तो उन जैसे बनने की हमारी सारी आशायें टूट जाती हैं। हम सोचने लगते हैं कि वे तो ईश्वर थे, इसलिए उन्होंने इतने बड़े काम कर लिये, हम नहीं कर सकेंगे। इससे जाति और देश में नैतिक पतन प्रारम्भ हो जाता है, क्योंकि लोगों के सामने किसी महापुरूष का आदर्श ही नहीं होता, जो होता है वह ईश्वर अवतार का अनुसारण ही नहीं कर सकते और न करना चाहते हैं। इस प्रकार अवतारवाद देश और मानव जाति के लिए बड़ा हानिकारक सिद्ध होता है।

साभार-

योगियों में निराले दयानन्द

भारत में अनेक योगी हुए हैं। वे संसार को छोड़कर मोक्ष के साधनों में लगे। भारत को उन पर गर्व है। आज भी हिमालय की गुफाएं योगियों से खाली नहीं हैं। आत्मा ही उनका संसार है तथा मोक्ष लक्ष्य, उसी के चिन्तन में वे अहर्निश डूबे रहते हैं। वे आत्मा से बाहर झांकते भी नहीं। कोई जिए या मरे, देश स्वतन्त्र हो या परतन्त्र लोग, लोग भूख प्यास से मरें या सुखद जीवन बिताएं इस बात की उन्हें परवाह ही नहीं। संसार अज्ञान, अत्याचार, अभाव, असमानता, निर्धनता आदि की चक्की में पिस रहा है, इस सबसे पृथक् हो वे अपनी साधना में लीन रहते हैं। हमारे लिए तो वे भी वन्दनीय हैं परन्तु दयानन्द में हम एक विशिष्टता देखते हैं। वे भी उच्चकोटि के योगी थे। लोगों ने उन्हें १८ घंटे तक समाधि लगाए देखा था। कुछ लोगों ने तो उन्हें धरती से ऊपर अधर में उठा भी देखा था। इतना योग निष्णात होने पर भी दयानन्द ने अपनी साधना को जारी रखते हुए भी दुःखित जनता को नहीं भुलाया था। भारत की निर्धनता, परतन्त्रता, पशु वध, विधवा अनाथों की दुर्दशा, नारी की अशिक्षा, अछूतों की हीनदशा, पाखण्ड, धर्म के नाम पर छल कपट, व्यभिचार, अज्ञानता ये सब दयानन्द को अन्दर से सालती थी। सब दुःखितों के दुःख को वे अपना मानते थे। एक बार वे गंगा किनारे समाधि में लीन थे। एक स्त्री को पुत्र वियोग से विलाप करते दुख कर समाधि खुलने पर उसे बिना कफ़न के नंगी लाश बहाते देख कर वे रोते हैं तथा अपने समाधि के एकाकी सुख को छोड़ कर लोकहित में लग जाते हैं जहाँ योगी लोग आत्मा से बाहर के जगत् को अपने पथ में बाधा मानते हैं वहाँ दयानन्द संसार के दुःख को मिटाने कमर कस कर निकलते हैं तथा अनेक कष्टों को सह कर भी जगत् हित के व्रत को लेते हैं। इसके लिए उनको अनेक कष्ट सहने पड़ते हैं तथा प्राणों से भी वियुक्त होना पड़ता है किन्तु महर्षिजी अपने व्रत में अडिग रह कर लोकसेवा के कठोर व्रत को प्राणपण से निभाते हैं। यह देव दयानन्द का योगियों में भी निरालापन था।

वैदिक कन्या गुरूकुल दवथला–मेरठ

२३ जून को प्रातःकिला परीक्षितगढ़ के निकट मेरठ जिले का कन्या गुरूकुल बन्द हो गया था उसका पुनः संचालन करने का संकल्प लिया गया सुनाकर लोगों को प्रेरणा प्रदान की श्री राजेश सेठी की अध्यक्षता में कार्यक्रम चला जिसमें श्री कुलदीप आर्य बिजनौर के भजन श्री पुनीत शास्त्री सन्दीप ने संयोजन किया प्रमोद आचार्य ने व्यवस्था सम्भाली यज्ञशाला का शिलान्यास स्वामी जी के करकमलों से प्रारम्भ हुआ फिर श्री सेठी जी बुढ़ना नगर, आर.पी. सिंह आर्य सूरजकुण्ड, थापर नगर, सदर, साकेत, पल्लवपुर मेरठ, से पधारे सभी आर्यों ने ईट रखकर शिलान्यास किया श्री राधेश्याम चौहान श्री सुखपाल सिंह एडवोकट सहित आस–पास के ग्रामों के भी आर्य जन उपस्थित रहे आशाराम आर्य सुसेठी आर्य विजयमुनि, देवेश्वरानन्द, राजमुनि आदि–आदि का आशीर्वाद मिला।

शोक संवेदना

आर्ष गुरूकुल एटा के प्राचार्य डॉ0 वागीश शर्मा जी की माता जी, सावित्री देवी जी पत्नि स्व0 आचार्य ज्योति स्वरूप जी, का निधन दिनांक 23.06.2018 को हो गया।

माता जी अपनी पूर्ण आयु जीवेम शरदः शतम् को सार्थक करते हुए 100 वर्ष से अधिक आयु तक जीवन सादगी से जीया।

सारा जीवन गुरूकुल की सेवा में तथा गुरूकुलीय रहन सहन में बिताया यज्ञ में प्रतिदिन भाग लेना माता जी का दिनचर्या में शामिल था। जैसे ही माता जी के निधन की सूचना क्षेत्र के आर्यजनों में पहुंची सैकड़ों की संख्या में आर्यजन एकत्रित हो गये। गुरूकुल के आचार्य तथा ब्रह्मचारियों द्वारा उनका अन्तिम संस्कार वैदिक रीति से किया गया। वेद मंत्रों की ध्वनि चहु ओर गुञ्जायमान थी मानों गुरूकुल में एक स्वर में वेदपाठ हो रहा हो।

सभी आर्यजनों ने नम आँखों से माता जी को अन्तिम विदाई दी दिनांक 1 जुलाई 2018 को गुरूकुल की यज्ञशाला में गुरूकुल के ब्रह्मचारी तथा विद्वानों द्वारा शान्ति यज्ञ सम्पन्न हुआ।

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के प्रधान डा. धीरज सिंह आर्य जी तथा मंत्री स्वामी धर्मेश्वरानन्द जी ने अपनी शोक संवेदना प्रकट की। ईश्वर दिवंगत आत्मा को शान्ति एवं सदगति प्रदान करें। शान्ति यज्ञ में देश तथा प्रदेश के अनेक विद्वानों ने भाग लिया पं0 नीरज शास्त्री, (मुम्बई), पं0 कैलाश कुमार शास्त्री (दिल्ली), आचार्य रामपाल शास्त्री (दिल्ली) आचार्य देवव्रत जी (राजस्थान), प्रो0 अवनीश कुमार शर्मा (दिल्ली), आचार्य शिवस्वरूप जी (नैष्ठिक) मुम्बई आदि अनेक विद्वानों की उपस्थित रही।

-कार्यकारी सम्पादक हरीश कुमार शास्त्री

उत्तर प्रदेश की समस्त आर्य समाजों/जिला प्रशासन/निबन्धक (विवाह पंजीयन)/निबन्धक/मण्डलीय उप निबंधक/सहायक निबन्धक, फर्म्स सोसायटीज एवं चिट्स तथा जिला आर्य प्रतिनिधि सभाओं के नाम विज्ञापित पत्र।

विवाह सम्बन्धी आदेश/निर्देश

- **आर्य मैरिज वैलीडेशन ऐक्ट–19 ऑफ 1937 के अन्तर्गत उत्तर प्रदेश में कार्यरत् आर्य समाजों द्वारा विवाह कराये जाने हेतु उत्तर प्रदेश की आर्य समाजों की स्वामिनी/प्रशासनिक संस्था आर्य प्रतिनिधि सभा उ0प्र0 द्वारा जारी आवश्यक निर्देश एवं औपचारिकता पूर्ति के सम्बन्ध में।**
- उत्तर प्रदेश की समस्त आर्य समाजों को अवगत एवं सूचित करना है, कि उत्तर प्रदेश में कार्यरत् आर्य समाजों की शिरोमणि संस्था आर्य प्रतिनिधि सभा उ0प्र0, नारायण स्वामी भवन, 5–मीराबाई मार्ग, लखनऊ सोसायटी रजिस्ट्रेशन ऐक्ट–1860 के अन्तर्गत एक पंजीकृत संस्था है तथा उत्तर प्रदेश में कार्यरत् आर्य समाजों की स्वामिनी/प्रशासनिक संस्था आर्य प्रतिनिधि सभा उ0प्र0, लखनऊ है तथा इसी से प्रदेश की आर्य समाजें सम्बद्ध/पंजीकृत हैं। आर्य समाज के नियम–उपनियम सं0–40, 41 व 43 एवं संस्था आर्य प्रतिनिधि सभा उ0प्र0, लखनऊ की पंजीकृत नियमावली के नियम–68 के अन्तर्गत किसी भी आर्य समाज का अलग से पंजीकरण कराया जाना उपरोक्त नियमों के विपरीत एवं विधिशून्य है।
  - **आर्य समाज के नियम– उपनियम– 40, 41, 43 निम्न प्रकार हैः–**
- "40– प्रत्येक प्रान्त में एक मुख्य सभा होगी, जिसका नाम आर्य प्रतिनिधि सभा होगा। सब समाजों की व्यवस्था उसी के अधीन तथा अनुकूल होगी। यह सभा अपने नियमादि स्वयं बनावेगी।"
- "41– स्थानीय समाज की ओर से प्रान्तीय प्रतिनिधि *सभा की किसी आज्ञा व व्यवस्था का* घोर और निरन्तर विरोध होने अथवा स्थानीय समाज में ऐसी अवस्था हो जाने पर जो प्रान्तीय सभा की सम्मति में समाज के लिए हानिकारक हो, प्रान्तीय सभा के प्रधान को अपनी अन्तरंग सभा की अनुमति से अधिकार होगा कि उस स्थानीय समाज के संगठन को नियत समय के लिए स्थगित कर देवे और समाज तथा समाज के अधीन संस्थाओं का प्रबन्ध उचित रीति से करावे।"
- "43– प्रान्तीय सभाओं से सम्बद्ध आर्य समाजों की रजिस्ट्री प्रान्तीय सभाओं से पृथक नहीं हो सकती। यदि कोई समाज अपनी सम्पत्ति और संगठन की रजिस्ट्री पृथक करायेगा और प्रान्तीय सभा चाहे तो वह धारा–41 के अनुसार उस समाज के विरूद्ध कार्यवाही कर सकती है।"
- **आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश, लखनऊ का नियम–5 (ई), 16 (1 व 2), 37, 67 (1) एवं 68, निम्नवत् हैः–**
- **नियम 5 का तात्पर्य प्रधान के कर्त्तव्याधिकार से है–**
- **"5 (ई)– असाधारण परिस्थिति में वह विशेष साधनोपायों का प्रयोग करेगा और उस विषय को आगामी अन्तरंग में प्रस्तुत करेगा।"**
- **"16 (1)–किसी आर्य समाज या किसी आर्य संस्था की ओर से सभा की किसी आज्ञा व व्यवस्था का घोर और निरन्तर उल्लंघन होने अथवा स्थानीय आर्य समाज या आर्य संस्था में ऐसा कुप्रबन्ध हो जाने पर जो सभा की सम्मति से समाज या संस्था के लिए हानिकारक हो, सभा के प्रधान/मन्त्री को अन्तरंग सभा की अनुमति से, जिसके विज्ञापन विषयों में यह विषय भी समाविष्ट हो अधिकार होगा कि उस स्थानीय समाज या संस्था के संगठन को नियत समय के लिए स्थगित कर देवे अथवा भंग कर देवे, समाज तथा उसके अधीन संस्थाओं अथवा अन्य आर्य संस्थाओं का प्रबन्ध उचित रीति से करें या करावें परन्तु यह व्यवस्था एक वर्ष तक ही रहेगी आवश्यकता होने पर एक वर्ष की अवधि और बढ़ायी जा सकती है।"**
- टिप्पणीः– इस खण्ड में प्रयुक्त आर्य संस्था की परिभाषा निम्न प्रकार हैः–
- **आर्य संस्था से अभिप्राय उस संस्था से है जो किसी आर्य समाज व उस संस्था द्वारा जो आर्य समाज में श्रद्धा रखती हो या उस व्यक्ति के द्वारा जो आर्य समाजी हो, स्थापित या संचालित हो, या नियंत्रित हो अथवा आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश सं संबंधित हो, तथा आर्य प्रतिनिधि सभा या किसी आर्य समाज को उस संस्था के सम्बन्ध में कोई अधिकार प्राप्त हो।"**
- **"16 (2)– यदि किसी सम्बन्धित आर्य समाज का कोई आर्य सभासद आर्य समाज के सिद्धान्तों और उद्देश्यों अथवा वैधानिक नियमों के विरूद्ध आचरण और व्यवहार करता हो अथवा सभा की आज्ञाओं की लगातार अवहेलना करता और उनको भंग करता हो, तो अन्तरंग सभा की स्वीकृति से प्रधान/मन्त्री सभा को अधिकार होगा कि उस सभासद को नियत अवधि के लिए स्थगित कर दे अथवा आर्य सभासदी से पृथक कर दे।"**
- **"37–यह प्रदेशीय न्याय सभा उन समस्त वादों और विरोधों को सुनेगी, जो प्रदेशीय आर्य प्रतिनिधि सभा के सम्बद्ध आर्य समाजों के मध्य 'उत्पन्न हुये हों, अथवा जो प्रदेशीय आर्य प्रतिनिधि सभा के सदस्यों के बीच सभा सम्बन्धी विषयों से सम्बद्ध और यह आर्य समाजों के सदस्यों के बीच उत्पन्न हुये ऐसे विवादों और मतभेदों को भी सुनेगी जिन्हें प्रदेशीय आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान अथवा प्रदेशीय न्याय सभा के प्रधान निर्णयार्थ इसके समक्ष भेजेंगे। यह सभा स्थानिक न्याय के निर्णयों के विरूद्ध आयी हुई अपीलों (अभ्यर्थनाओं) को सुनेगी और उनका निर्णय करेगी।"**
- "67 (1)–सभी सम्बन्धित आर्य समाजों और उनकी संस्थाओं का धन गवर्नमेंट सिक्योरिटी अथवा अन्य किसी अन्तरंग सभा द्वारा स्वीकृत व्यवस्था या बैंक में रहेगी।"
- **अतः उपरोक्त नियम के अनुसार बैंक में/स्वीकृत संस्था में, आर्य समाज का खाता खोलना अनिवार्य है।**
- "68–इस सभा से सम्बद्ध आर्य समाजों आर्य शिक्षण संस्थाओं की रजिस्ट्री इस सभा से पृथक नहीं हो सकती। यदि कोई आर्य समाज, आर्य शिक्षण संस्था अपनी सम्पत्ति और संगठन की रजिस्ट्री पृथक करायेगा तो उसके विरूद्ध अनुशासन की कार्यवाही की जा सकती है।"
- **अतः सम्बद्ध आर्य समाजें एवं आर्य शिक्षण संस्थाओं की पृथक रजिस्ट्री सम्बन्धी प्रयास न करें तथा अनुशासनात्मक कार्यवाही से बचें।**
- आर्य प्रतिनिधि सभा उ0प्र0, 5–मीराबाई मार्ग, लखनऊ की अन्तरंग सभा (प्रबन्ध समिति) की बैठक दिनांक–22 अप्रैल, 2018 में पारित प्रस्ताव के अनुपालन में आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश, लखनऊ से सम्बद्ध/पंजीकृत आर्य समाजों को निर्देशित किया जाता है कि वे 25 जुलाई, 2018 के उपरान्त कोई भी विवाह आर्य प्रतिनिधि सभा उ0प्र0, लखनऊ द्वारा निर्देशित नियमों का पालन करते हुए ही सम्पन्न करायेंगें तथा आर्य प्रतिनिधि सभा उ0प्र0, लखनऊ द्वारा निर्गत विवाह प्रमाण पत्र के प्रारूप पर ही विवाह प्रमाण पत्र जारी करेंगे।
- विवाह प्रमाण पत्र की प्रतिलिपि तीन प्रतियों में है, जो आर्य प्रतिनिधि सभा उ0प्र0, लखनऊ द्वारा जारी किये जाने की व्यवस्था कर दी गई है। अतः सभी सम्बद्ध/पंजीकृत आर्य समाजों को निर्देशित किया जाता है कि वे अपनी आवश्यकतानुसार प्रति विवाह प्रमाण–पत्र शुल्क रू0 500/– की दर से udn अथवा आर्य प्रतिनिधि सभा उ0प्र0, लखनऊ के नाम डिमाण्ड ड्राफ्ट बनवाकर संस्था कार्यालय–आर्य प्रतिनिधि सभा उ0प्र0, 5–मीराबाई मार्ग, लखनऊ में जमा करके प्राप्त कर लें।
- **विवाह सम्बन्धी महत्वपूर्ण औपचारिकताएं निम्नवत् हैं:–**
- 1– दोनों (लड़का एवं लड़की) पक्षों से विवाह सम्बन्धी प्रार्थना पत्र प्राप्त किया जाना।
- 2– लड़का व लड़की की तरफ से एफीडेविड (रू0 10–10 के स्टैम्प पेपर पर) नोटरी द्वारा प्रमाणित, जिसमें अविवाहित होने, विवाह विच्छेदन सम्बन्धित विवरण एवं आदेश की प्रति, पति एवं पत्नी में से किसी एक की मृत्यु सम्बन्धी प्रमाण पत्र तथा आर्य समाज के सिद्धान्तों एवं नियमों में पूर्ण आस्था एवं विश्वास रखने, तथा विवाह से पूर्व किसी थाने में प्राथमिकी दर्ज न होने, दहेज लेन–देन से मुक्त होने, परिवार के रजामन्दी अथवा अपनी स्वेच्छा से बिना किसी जोर–दबाव के तथा किसी भी तथ्य को छिपाने की दशा में आर्य समाज की कोई जिम्मेदारी नहीं होगी, बल्कि स्वयं जिम्मेदार होने से सम्बन्धित शपथ पत्र प्राप्त किये जाने अनिवार्य होगें, यदि किसी प्रकार की कानूनी कार्यवाही पक्षकारों द्वारा की जाती है, तो उसका समस्त उत्तरदायित्व (मय खर्चा सहित) पक्षकारों का होगा।
- 3– वैदिक धर्म/हिन्दू मत के अतिरिक्त अन्य (मुस्लिम, सिक्ख, ईसाई) मत के लड़का–लड़की के विवाह के लिए वैदिक धर्म/हिन्दू मत अपनाये जाने के लिए धर्म (मत) परिवर्तन हेतु शपथ पत्र प्राप्त करने के उपरान्त धर्म (मत) परिवर्तन किया जाएगा तथा विवाह से पूर्व परिवर्तित नाम किसी पंजीकृत अखबार में प्रकाशित कराया जाना अनिवार्य होगा।
- 4– आयु प्रमाण पत्र (हाई स्कूल का प्रमाण पत्र अथवा सी0एम0ओ0 द्वारा जारी आयु प्रमाण पत्र) बालिग होने से सम्बन्धित।
- 5– निवास प्रमाण पत्र (आधार कार्ड अनिवार्य रूप से)।
- 6– वर–वधू पक्ष से दो गवाह नाम पता एवं फोन नं0/मोबाईल नम्बर उनके आधार कार्ड सहित प्राप्त करना अनिवार्य होगा।
- 7– लड़का–लड़की के 6–6 फोटो पासपोर्ट साईज के।
- **उपरोक्त औपचारिकताएं विवाह से पूर्व पूर्ण करा लेना होगा।**
- 8– विवाह मण्डप के तीन फोटो (जयमाल, सिंदूर दान एवं फेरे के)
- 9– विवाह पंजिका पर विवाह सम्बन्धी एक संयुक्त फोटो रजिस्टर पर चस्पाकिया जाना अनिवार्य होगा।
- आर्य प्रतिनिधि सभा उ0प्र0, लखनऊ से सम्बद्ध/पंजीकृत आर्य समाजों को निर्देशित किया जाता है, कि उपरोक्त निर्देशों का कड़ाई से पालन किया जाये तथा नियमानुसार विवाह संस्कार सम्पन्न कराया जाये तथा स्वामिनी संस्था द्वारा निर्गत प्रमाण पत्र के प्रारूप पर ही विवाह प्रमाण–पत्र जारी किया जाये। आदेशों–निर्देशों के उल्लंघन करने की स्थिति में नियमानुसार यथोचित वैधानिक कार्यवाही करते हुए प्राथमिकी दर्ज करायी जाएगी तथा डुप्लीकेसी करने सम्बन्धी प्रकरण प्रकाश में आने पर जॉचोपरान्त सम्बन्धित आर्य समाज की मान्यता स्थगित/निरस्त कर संस्था के उपरोक्त नियमों के अन्तर्गत वैधानिक कार्यवाही सुनिश्चित की जाएगी।
- उत्तर प्रदेश में संस्था आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश, लखनऊ से सम्बद्ध आर्य समाजें किसी भी कार्य दिवस में विवाह प्रमाण पत्र उपरोक्तवत् निर्धारित शुल्क जमा करके प्राप्त कर सकते हैं।
- उपरोक्त आदेश/निर्देश/निर्णय संस्था आर्य प्रतिनिधि सभा उ0प्र0, लखनऊ की अन्तरंग सभा की बैठक दिनांक–22 अप्रैल,2018 में पारित प्रस्ताव के क्रम में जारी किये जा रहे हैं। अनुपालन किया जाना सुनिश्चित करें।
- उपरोक्त कार्यवाही इस आशय से जारी की जा रही है, क्योंकि प्रदेश में आर्य समाज एवं संस्था आर्य प्रतिनिधि सभा उ0प्र0, के उपरोक्त नियमों, उप–नियमों के विपरीत अनाधिकृत एवं अपंजीकृत आर्य समाजों द्वारा मनमाने तरीके से विवाह प्रमाण पत्र जारी किये जाते हैं, जिस पर तत्काल प्रभाव से रोक लगायी जा सके।
- **नोटः–आर्य प्रतिनिधि सभा उ0प्र0, लखनऊ से निर्गत एवं आर्य समाज से जारी विवाह प्रमाण पत्र खो–जाने/नष्ट हो जाने की स्थिति में नजदीकी थाने में प्राथमिकी दर्ज कराते हुए रू0 10/– के स्टैम्प पेपर पर सम्बन्धित आशय का शपथ पत्र आर्य प्रतिनिधि सभा उ0प्र0, 5–मीराबाई मार्ग, लखनऊ में जमा कर दूसरी प्रति के लिए नियमानुसार प्रार्थना पत्र प्रस्तुत कर प्राप्त किया जा सकता है।**
- **विवाह प्रमाण–पत्र का नमूना प्रति निम्नवत् प्रकाशित किया जा रहा हैः–**

(स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती)
सभा मन्त्री

आर्य मित्र

नारायण स्वामी भवन, ५-मीराबाई मार्ग, लखनऊ दूर/फैक्सः ०५२२-२२८६३२८
का० प्रधान- ०६४१२७४४३४१, मंत्री- ०६८३७४०२१६२, व्यवस्थापक- ६३२०६२२२०५
ई-मेल : apsabhaup86@gmail.com

सेवा में

विवाह प्रमाण-पत्र नमूना, आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र०

स्थापित : .... ओ३म् पंजी० संख्या : ....

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य समाज

(सम्बद्ध-आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र०, ५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ)
फोन : 0522-2286328 • ई-मेल apsabhaup86@gmail.com

विवाह प्रमाण-पत्र

क्रमांक : दिनांक : ....

सभा प्रति

आज दिनांक .... को आयुष्मती ....
जन्म तिथि .... सुपुत्री ....
पता ....
.... का
विवाह चि० श्री .... जन्म तिथि ....
सुपुत्र श्री .... पता ....
.... के
साथ "द आर्य मैरिज वैलीडेशन एक्ट १९ ऑफ १९३७" के अन्तर्गत वैदिक रीति से आर्य समाज .... कार्यालय पता ....
.... जिला .... में सम्पन्न कराया गया।

गवाह का नाम व पता :
१. ....
....
२. ....
....

पुरोहित का नाम व मोबाइल नम्बर
....
.... प्रधान/मंत्री

नमूना प्रति

स्थापित : .... ओ३म् पंजी० संख्या : ....

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य समाज

(सम्बद्ध-आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र०, ५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ)
फोन : 0522-2286328 • ई-मेल apsabhaup86@gmail.com

विवाह प्रमाण-पत्र

क्रमांक : दिनांक : ....

आर्य समाज प्रति

आज दिनांक .... को आयुष्मती ....
जन्म तिथि .... सुपुत्री ....
पता ....
.... का
विवाह चि० श्री .... जन्म तिथि ....
सुपुत्र श्री .... पता ....
.... के
साथ "द आर्य मैरिज वैलीडेशन एक्ट १९ ऑफ १९३७" के अन्तर्गत वैदिक रीति से आर्य समाज .... कार्यालय पता ....
.... जिला .... में सम्पन्न कराया गया।

गवाह का नाम व पता :
१. ....
....
२. ....
....

पुरोहित का नाम व मोबाइल नम्बर
....
.... प्रधान/मंत्री

नमूना प्रति

स्थापित : .... ओ३म् पंजी० संख्या : ....

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य समाज

(सम्बद्ध-आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र०, ५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ)
फोन : 0522-2286328 • ई-मेल apsabhaup86@gmail.com

विवाह प्रमाण-पत्र

क्रमांक : दिनांक : ....

आज दिनांक .... को आयुष्मती ....
जन्म तिथि .... सुपुत्री .... पता ....
....
का विवाह चि० श्री .... जन्म तिथि ....
सुपुत्र श्री .... पता ....
.... के साथ
"द आर्य मैरिज वैलीडेशन एक्ट १९ ऑफ १९३७" के अन्तर्गत वैदिक रीति से आर्य समाज ....
कार्यालय पता .... जिला .... में सम्पन्न कराया गया।

गवाह का नाम व पता :
१. ....
....
२. ....
....

पुरोहित का नाम व मोबाइल नम्बर
....
.... प्रधान/मंत्री

नमूना प्रति

राष्ट्रीय प्रशिक्षण शिविर के समापन तथा अन्य कार्यक्रमों की झलकियां

राष्ट्रीय प्रशिक्षण शिविर एवं दीक्षान्त समारोह में भाग लेते हुए स्वामी धर्मेश्वरानन्द जी व महाशय धर्मपाल जी आर्य एम.डी.एच. के साथ गुरूकुल के ब्रह्मचारी गण।

सत्यनारायण ट्रस्ट द्वारा योग शिविर में पुरस्कार देते हुए श्री बेचन सिंह आर्य जी एवं आचार्य विश्वव्रत शास्त्री जी

आर्ष गुरुकुल एटा के आचार्य डॉ० वागीश शर्मा जी की माता जी के शान्ति यज्ञ में यज्ञ करते हुए परिवारीजन अन्य विद्वतगण

स्वामी-आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश सम्पादक - मुद्रक -प्रकाशक -श्री स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती, भगवानदीन आर्य भाष्कर प्रेस, 5-मीराबाई मार्ग, लखनऊ के लिए अस्थायी रूप में शारदा प्रिंटिंग प्रेस, माडल हाउस, लखनऊ से मुद्रित एवं प्रकाशित लेखों में वर्णित भाषा या भाव से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है- सम्पूर्ण विवादों का न्याय क्षेत्र लखनऊ न्यायालय होगा।